



प्राण

अंक 3 वर्ष 2

अगस्त - सितम्बर 2017



ये ढोल हैं। ये कुत्ते हैं पर
गलियों या घरों में नहीं रहते।

बबूल

विनोद पदरज

छाए मेघ
अषाढ़ के
खिल खिल
गए बबूल।
चाँदी जैसे शूल हैं
सोने जैसे फूल।

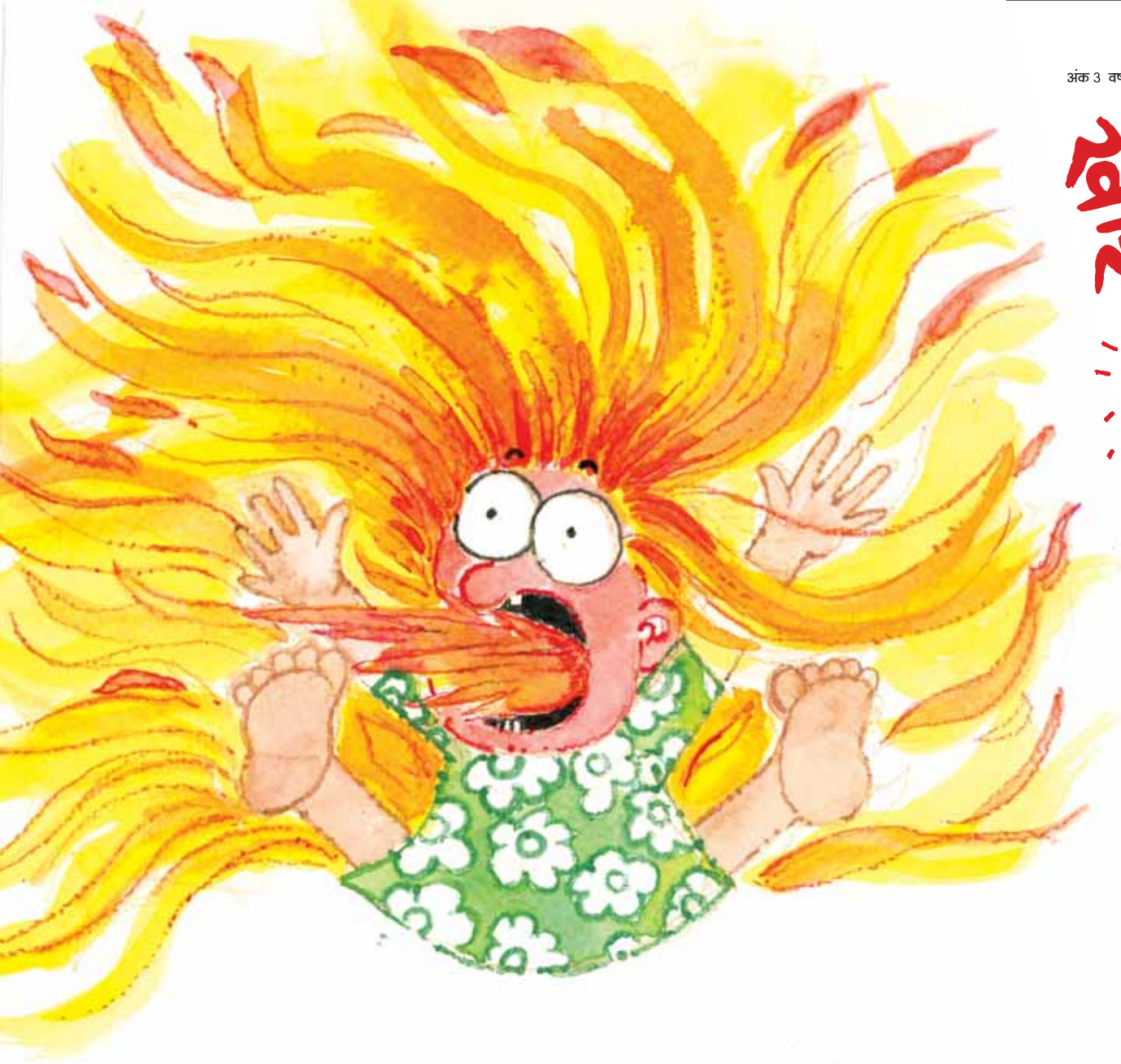
अषाढ़ - हिन्दी महीना। आमतौर पर बारिश का पहला महीना।
शूल - काँटा

चित्र: नीलेश गहलोत

बैड टाय

शिवचरण सरोहा

खाई
दाल
मिर्च
लाल
पीटे
गाल
नोंचे
बाल
बुरा
हाल



चित्र: वन्दना बिष्ट

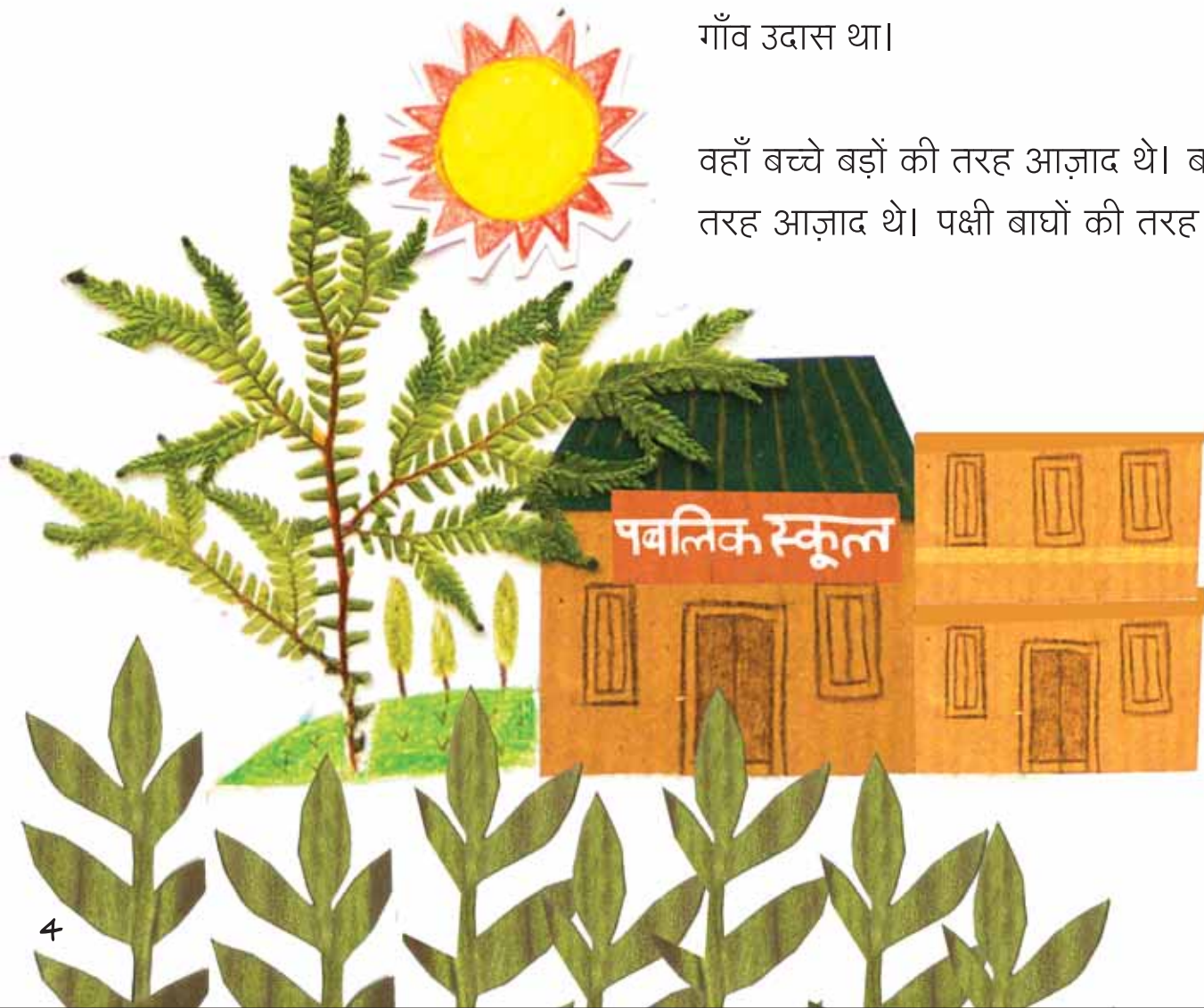


गाँव का स्कूल

श्वेता नम्बियार

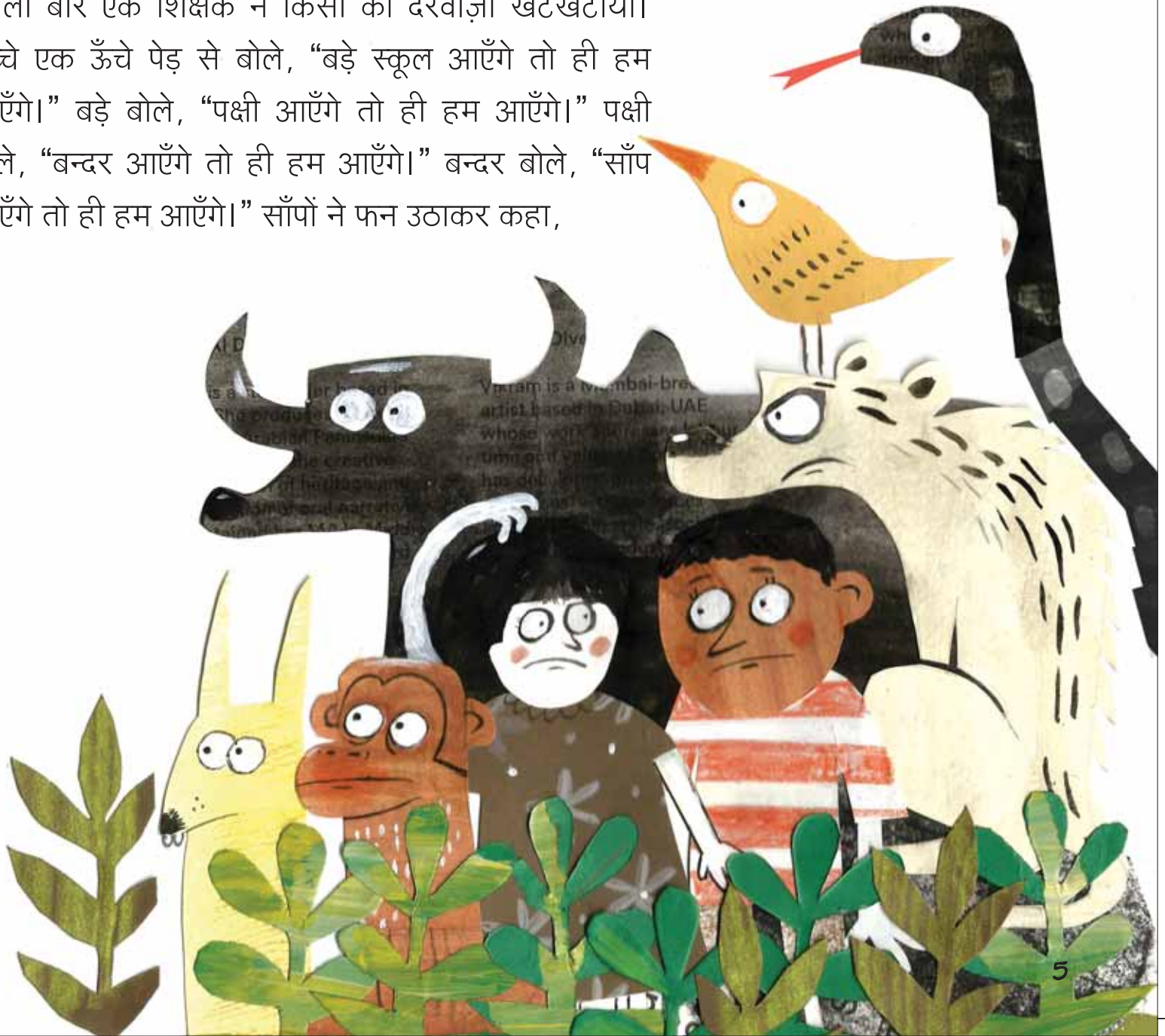
एक गाँव में यह पहली बार हुआ। पहली बार ईंटें आईं। पहली बार एक पक्की इमारत बनी। गाँव में घर थे। पर वे तो बाँस से बनते थे। पत्तियों से, घासों से उनकी छतें बनती थीं। मिट्टी से दीवारें बनती थीं। यह पहली बार हुआ। गाँव में स्कूल खुला। पहली बार हुआ कि सब बच्चे इस स्कूल में पढ़ने जाएँगे। पूरा गाँव उदास था। शायद पहली बार पूरा गाँव उदास था।

वहाँ बच्चे बड़ों की तरह आज़ाद थे। बड़े पक्षियों की तरह आज़ाद थे। पक्षी बाघों की तरह अलमस्त थे।



पहली बार स्कूल की इमारत बनी। पहली बार गाँव में पक्की इमारत बनी।

पहली बार एक शिक्षक ने किसी का दरवाज़ा खटखटाया। बच्चे एक ऊँचे पेड़ से बोले, “बड़े स्कूल आएँगे तो ही हम आएँगे।” बड़े बोले, “पक्षी आएँगे तो ही हम आएँगे।” पक्षी बोले, “बन्दर आएँगे तो ही हम आएँगे।” बन्दर बोले, “साँप आएँगे तो ही हम आएँगे।” साँपों ने फन उठाकर कहा,



“खरगोश आएँगे तो ही हम आएँगे।”
खरगोश बोले, “सियार अगर आएँगे तो ही
हम आएँगे।” सियार बोले, “जंगली भैंसे
आएँगे तो ही हम आएँगे।” जंगली भैंसे
बोले, “अगर शेर आए तो ही हम आएँगे।”

शेर कहीं आसपास ही था। वह ये सब
सुनकर ज़ोर-से बोला, “हाँ, क्यों नहीं...मैं
आऊँगा।” शिक्षक शेर की दहाड़ सुनकर
वहाँ से ज़ोर से भागा। और फिर कभी उस
गाँव में नहीं लौटा।



...पहली बार देखो क्या हुआ उस गाँव में।
...क्या हुआ उस गाँव में। छद्म



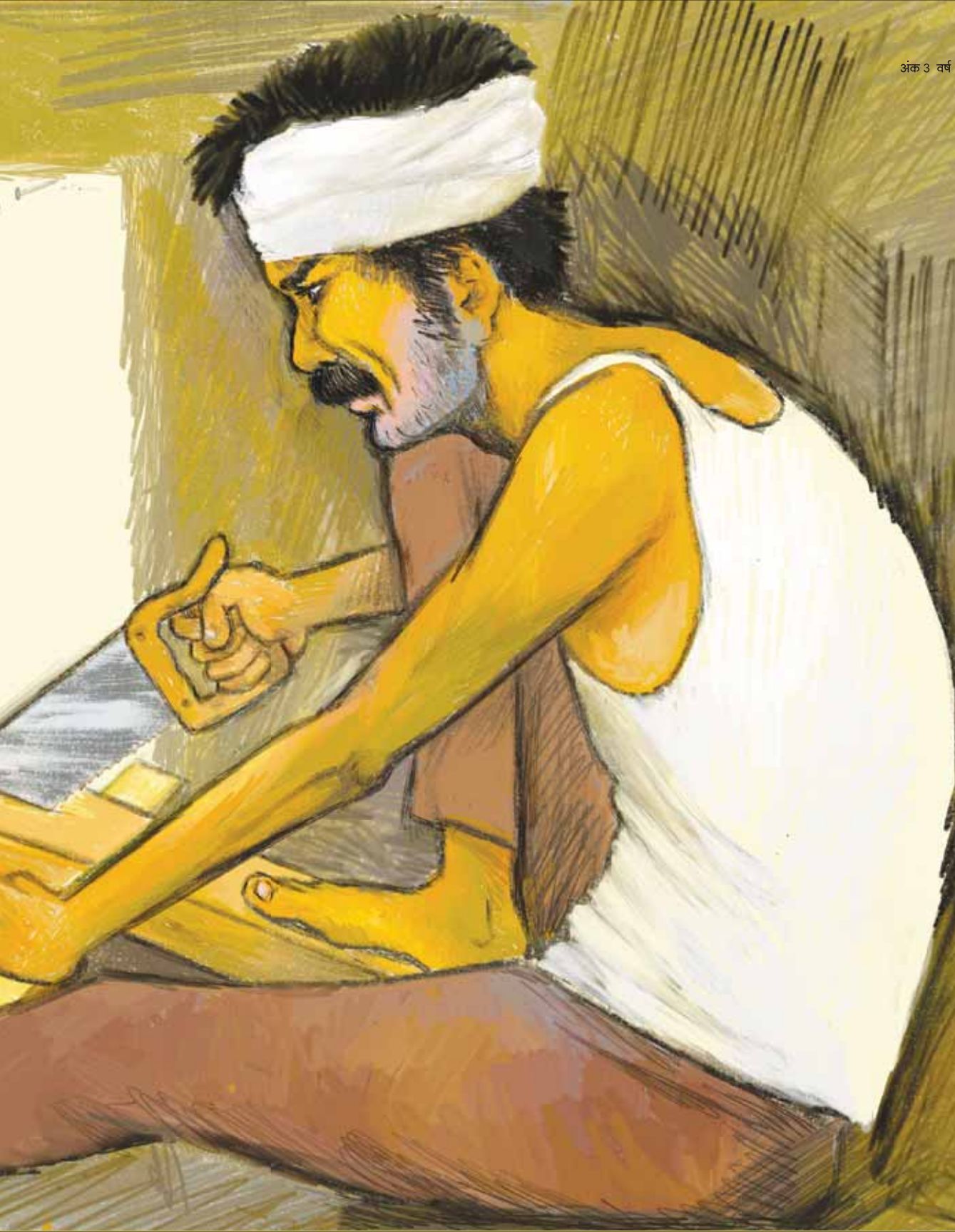
चित्र: प्रिया कुरियन

कारीगर के यार

प्रभात

चले हथौड़ी
ठक ठक ठक
आरी चलती
खर खर खर
चले बसूला
फस फस फस
चले पेचकस
कस कस कस
ये सारे औज़ार हैं
कारीगर के यार हैं

चित्र: अतनु राय

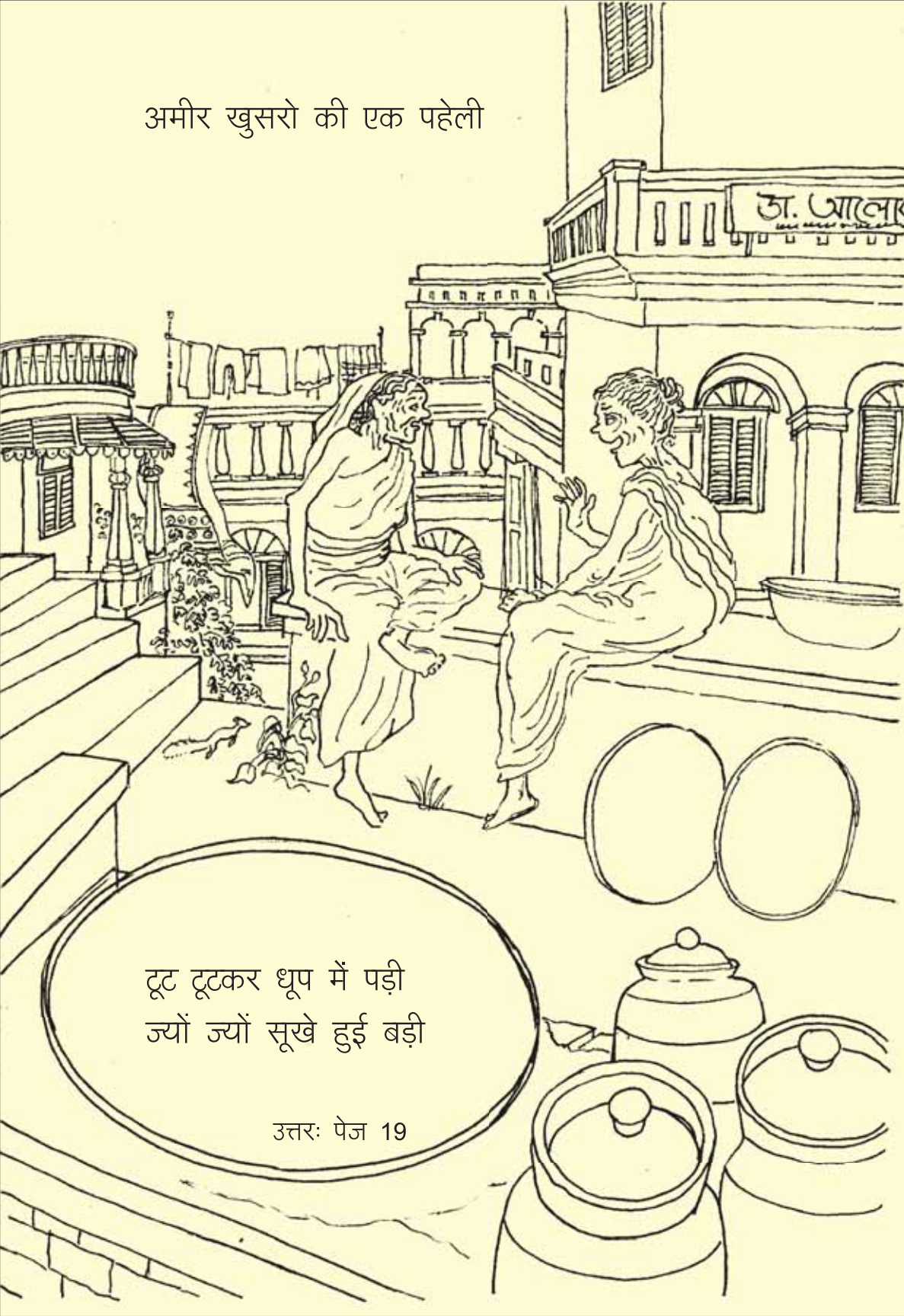


गाय बोली गो यू डोंट नो



चित्र: तापोशी घोषाल

अमीर खुसरो की एक पहेली



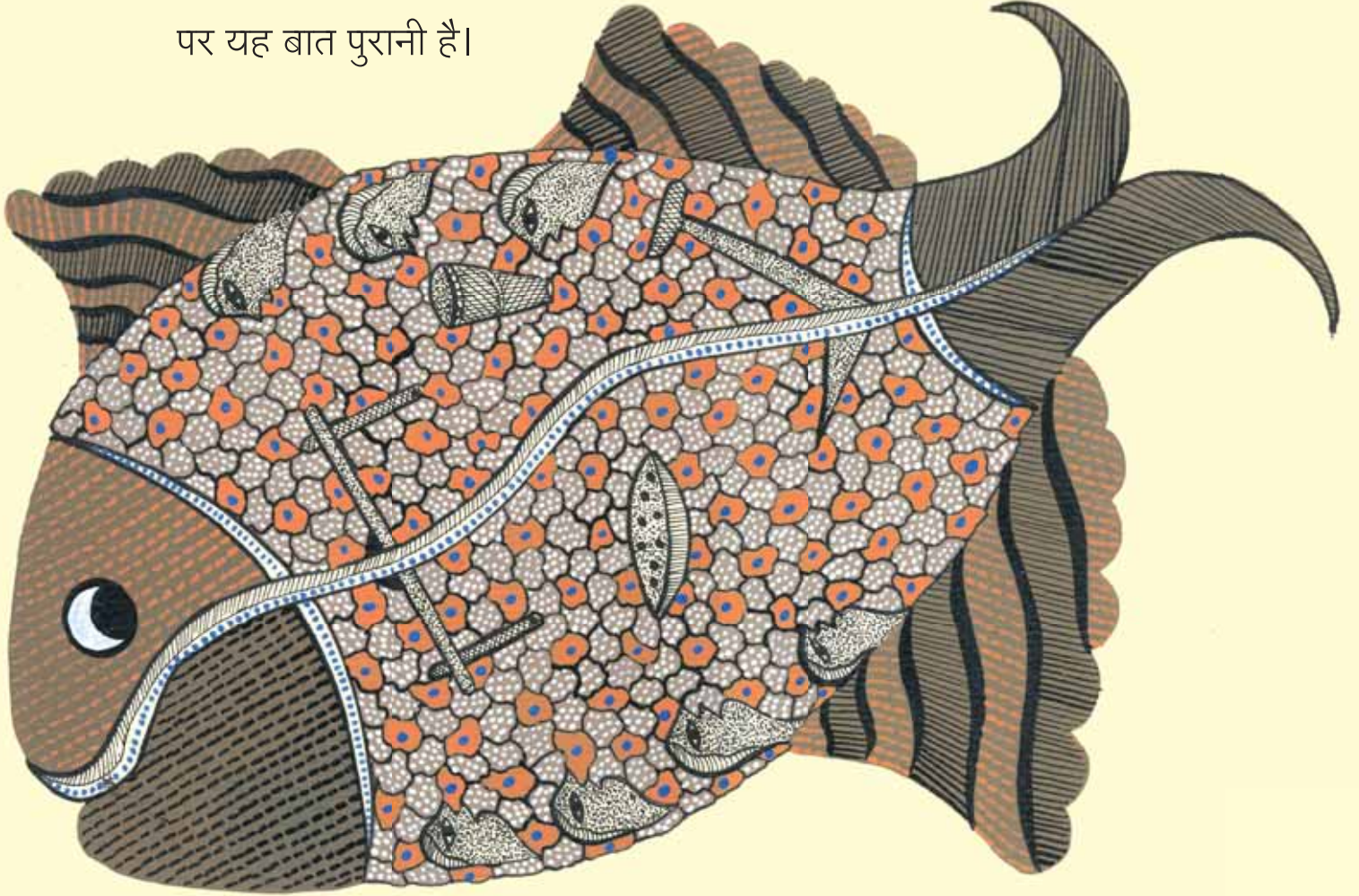
टूट टूटकर धूप में पड़ी
ज्यों ज्यों सूखे हुई बड़ी

उत्तर: पेज 19



चित्र: सुजाशा दासगुप्ता

मछली जल की रानी है
पर यह बात पुरानी है।



चित्र - प्रदीप मरावी

घास में फूल

मोहित शर्मा

घास में
एक फूल
कोई छोटा-सा
बबूल

फूल सुनहरे
पात हरे
खिल खिल
बात करे

तितली से
घासों से
सारे खासम
खासों से

चित्र: सोनाली बिस्वास





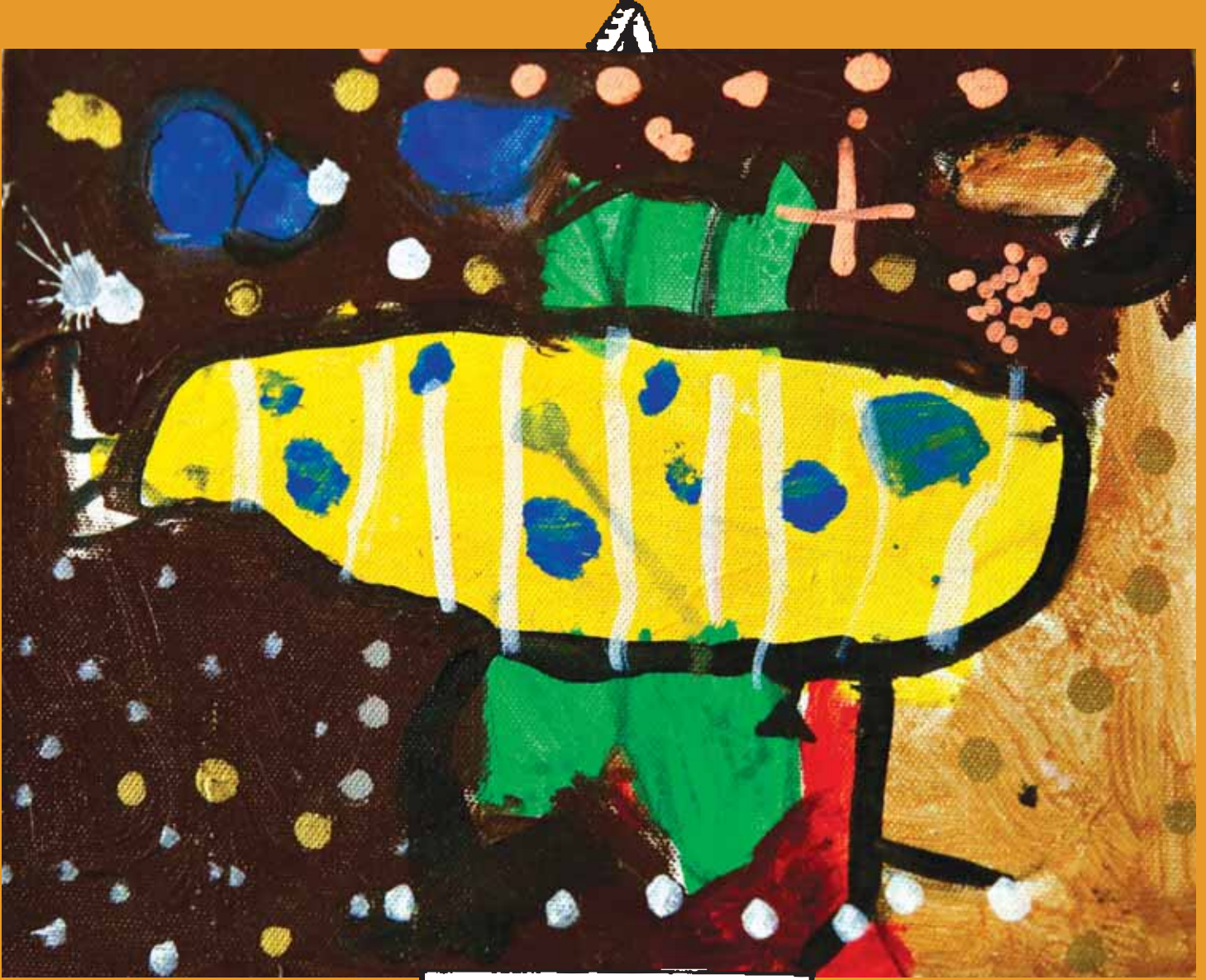
वैशाली दास
तीसरी, डीपीएस बनारस

मैंने चींटियों को चलते देखा और
देखा कि चींटियाँ चलते-चलते एक
साथ जैसे एक चींटी के पीछे दूसरी
चींटी एक झण्ड बनाकर चलती हैं।



गार्गी शिंगणे
चौथी, चण्डीगढ़





चित्र: टिमोथी
पाँच साल, बाली, इंडोनेशिया



मस्त ढोल

विनता विश्वनाथन

ये ढोल हैं। ये कुत्ते हैं पर गलियों या घरों में नहीं रहते। जंगल में रहते हैं। भेड़िया और लोमड़ी इनके रिश्तेदार हैं। लाल रंग के ढोल की पूँछ मोटी

और काली-सी होती है। ये अकेले नहीं रहते। हमेशा अपने दोस्तों के साथ घूमते हैं। और मिलकर ही चीतल, साँभर, सुअर का शिकार करते हैं। ये भौंकते नहीं हैं। सीटी जैसी तीखी आवाज़ में चिल्लाते हैं। जब मैं बोरी-सतपुड़ा के जंगलों में रहती थी तब मैंने इनको बहुत बार सुबह-सुबह देखा था। थोड़े-से ढोल चीतल के पीछे भागते थे और थोड़े से आगे छिपकर इनका इन्तज़ार



चित्र: देवब्रत घोष

करते। जैसे चोर-पुलिस के खेल में करते हैं। जंगल में जब चीतल की आवाज़ें गूँजने लगें तो समझ जाओ कि ढोल शिकार करने निकले हैं।

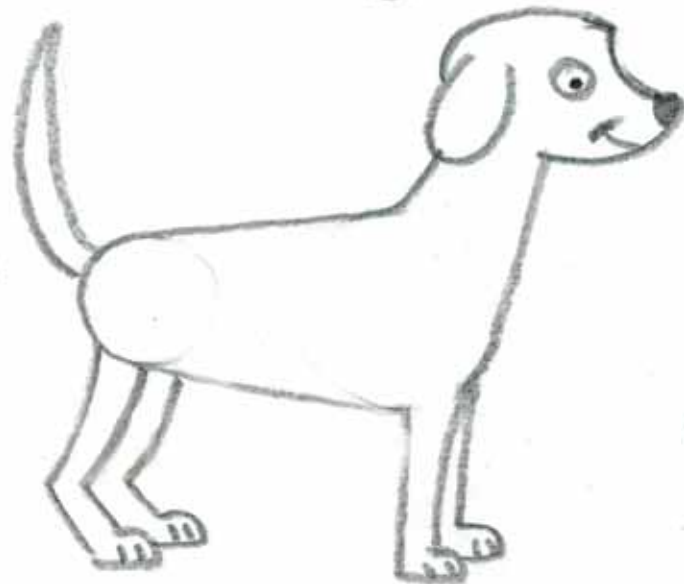
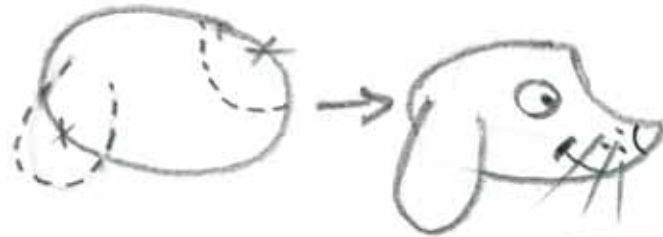
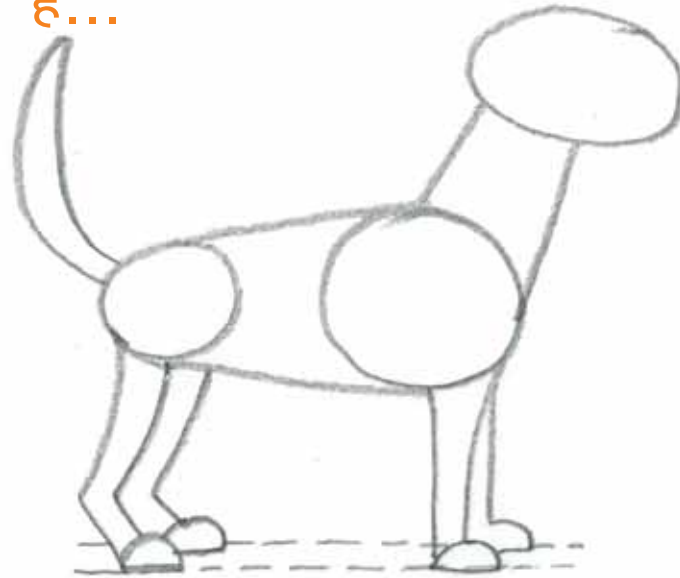
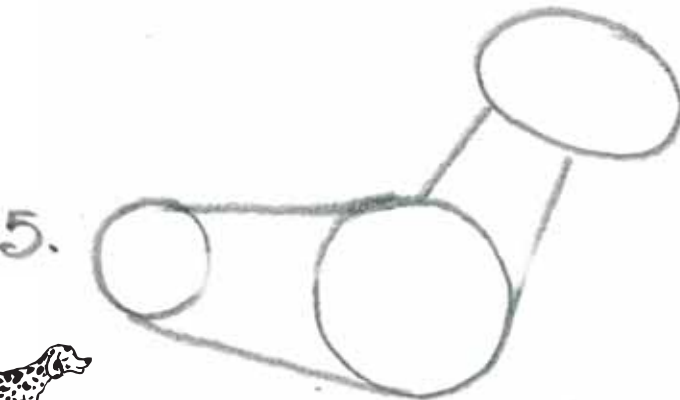
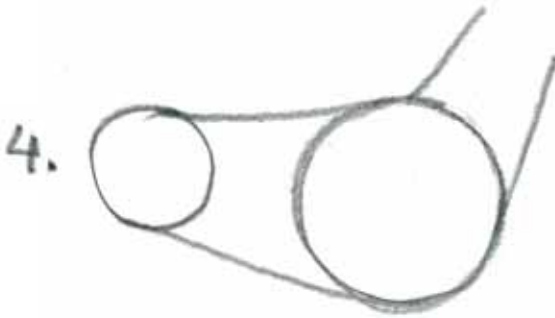
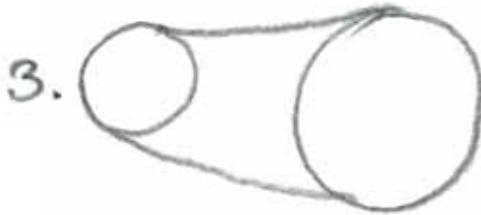
एक बार मैं जंगल में घूम रही थी। तब मैंने पास आती कुछ आवाज़ें सुनीं। हमारे एकदम पास से कुछ ढोल भागते हुए निकल गए। वे अपनी ही मस्ती में थे। वो हमारे इतना पास

थे, फिर भी उनको हमारे होने का पता नहीं चला। मज़ा आ गया।

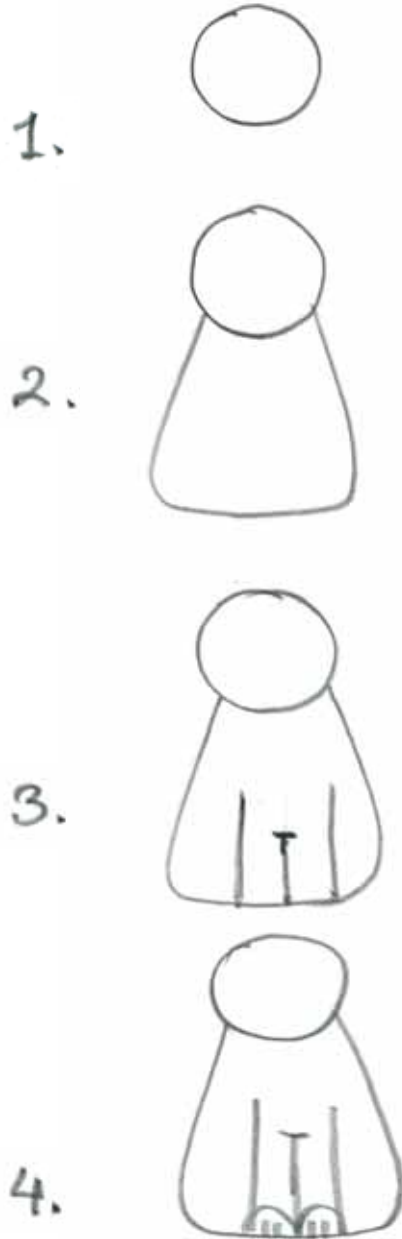
क्या तुमने किसी जंगली जानवर को इतने पास से देखा है? किसी हिरन, चिड़िया, कछुए, साँप या कीड़े को? 

ढोल - जंगली कुत्ते

चलो कुत्ता बनाते हैं...

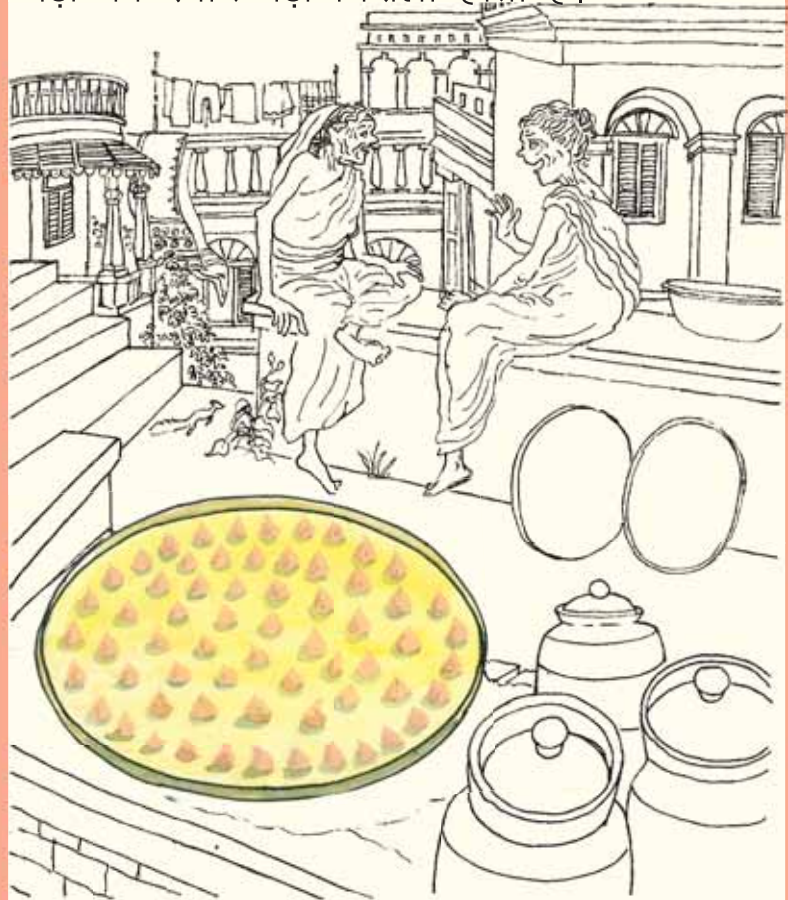


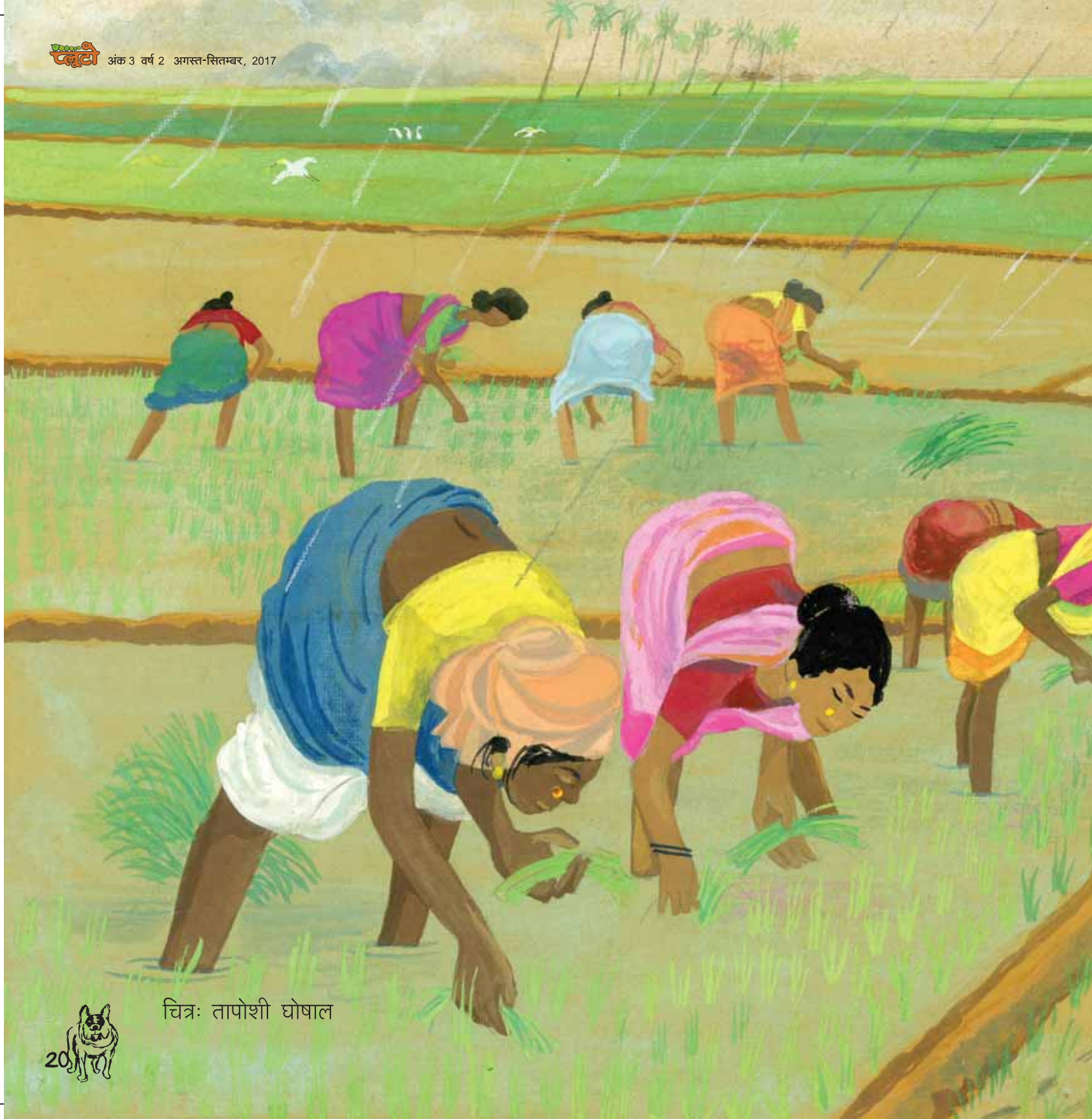
एक और आसान तरीका...



उत्तर: बड़ी

बड़ी तुमने कभी खाई हैं? मूँग की बड़ियाँ,
उड़द की बड़ियाँ, सोयाबीन की बड़ियाँ...।
बड़ी का स्वाद बड़ा निराला होता है।





चित्र: तापोशी घोषाल



धान लगाई है
अबकी खेत में होने
अपनी जान लगाई है। सुशील शुक्ल



बिड़ो देकर मैं



बनूंगी...

निधि सक्सेना

उस रोज़ मैं कैमरे को क्लिक करती रही।
क्लिक करती रही। लेकिन तस्वीर न खिंची तो न
ही खिंची।

“माँ, ये क्या हुआ कैमरे को?”

“शायद कैमरा कैमरा बने-बने बोर हो गया होगा।
और उसका अब कुछ और बनने को मन करता
होगा।”

“...तो क्या कल को मेरी साइकिल भी बोर हो
जाएगी?”

“और तुम्हारा स्कूटर?”

“स्कूटर जब थक जाएगा तब कुछ और बन
जाएगा।”

“ऐसे थोड़े होता है! होता है क्या?”



“हाँ होता है न! तुम्हारी बोटल जो खो गई थी वो खो कर कुतुबमीनार बनी बैठी है।”

“ये पंखा पहले नाव था”

“तो इसे चलाते कहाँ थे?”

“सड़क पहले नदी थी।”

“तो चाँद?”

“चाँद रसगुल्ला था।”

“जब वो रसगुल्ला था तब उसे किसी ने खाया नहीं?”

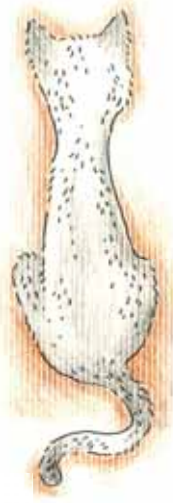
“वो बचा हुआ रसगुल्ला था।”

“जैसे मेरा होमवर्क बच जाता है?”

“हाँ, जैसे रास्ता बचा हुआ रह जाता है।”

“तो बचा हुआ होमवर्क क्या बनता होगा?”

“बिल्ली।”



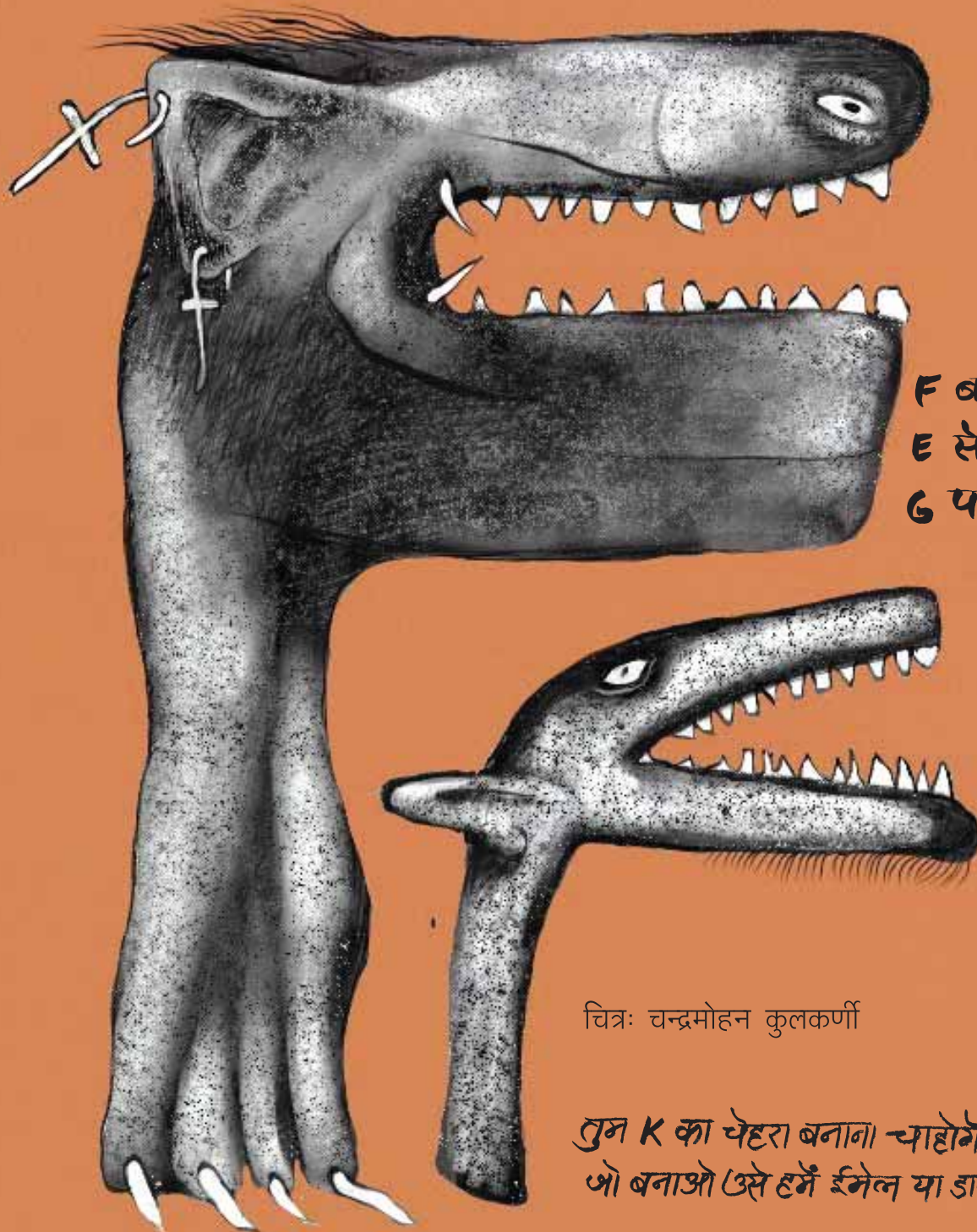
चित्र : प्रोइती रॉय

“इसीलिए दुनिया में इतनी
सारी बिल्लियाँ हैं।”

“माँ, असली बिल्ली और
होमवर्क वाली बिल्ली
एक-दूसरे को
पहचानती होंगी?”



AY जरा ॥ देख K चलो



F बहुत हँसता था
E से खुश रहता था
G पर तानेकसता था

चित्र: चन्द्रमोहन कुलकर्णी

तुम K का चेहरा बनाना चाहोगे?
जो बनाओ उसे हमें ईमेल या डाक से भेज दो।

भाँदल

एक लोककथा

बन्दरों का एक झुण्ड था। उसमें एक बूढ़ा बन्दर भी था। जवान बन्दर पेड़ पर चढ़कर जामुन खा रहे थे। बूढ़ा पेड़ पर चढ़ नहीं सकता था। उसने बन्दरों से कहा, “मेरे लिए भी कुछ जामुनें गिरा दो।” उसकी बात किसी ने नहीं सुनी।

चित्र: मिष्टुनी चौधुरी

बूढ़ा बन्दर गाँव में कहीं से एक माँदल उठा लाया। कुँए के चारों तरफ घूम-घूमकर वह माँदल बजाने लगा। सभी बन्दर माँदल सुनकर उसके पास आ गए। उन्होंने बूढ़े से पूछा, “इतना सुन्दर माँदल तुम्हें कहाँ मिला?”

बूढ़े बन्दर ने कहा, “इसी कुँए से निकाला है।”
सारे बन्दर कुँए में कूद गए। पेड़ हवाओं से झूलता रहा। उससे जामुन टपकते रहे। और बूढ़ा आराम से उन्हें खाता रहा। चलती

यह कहानी रोशन टोप्पो ने कवि प्रभात को सुनाई।
उन्होंने हमें सुनाई। तुम यह कहानी किसे सुनाओगे?

नट की साठकी

रावेन्द्र कुमार रवि

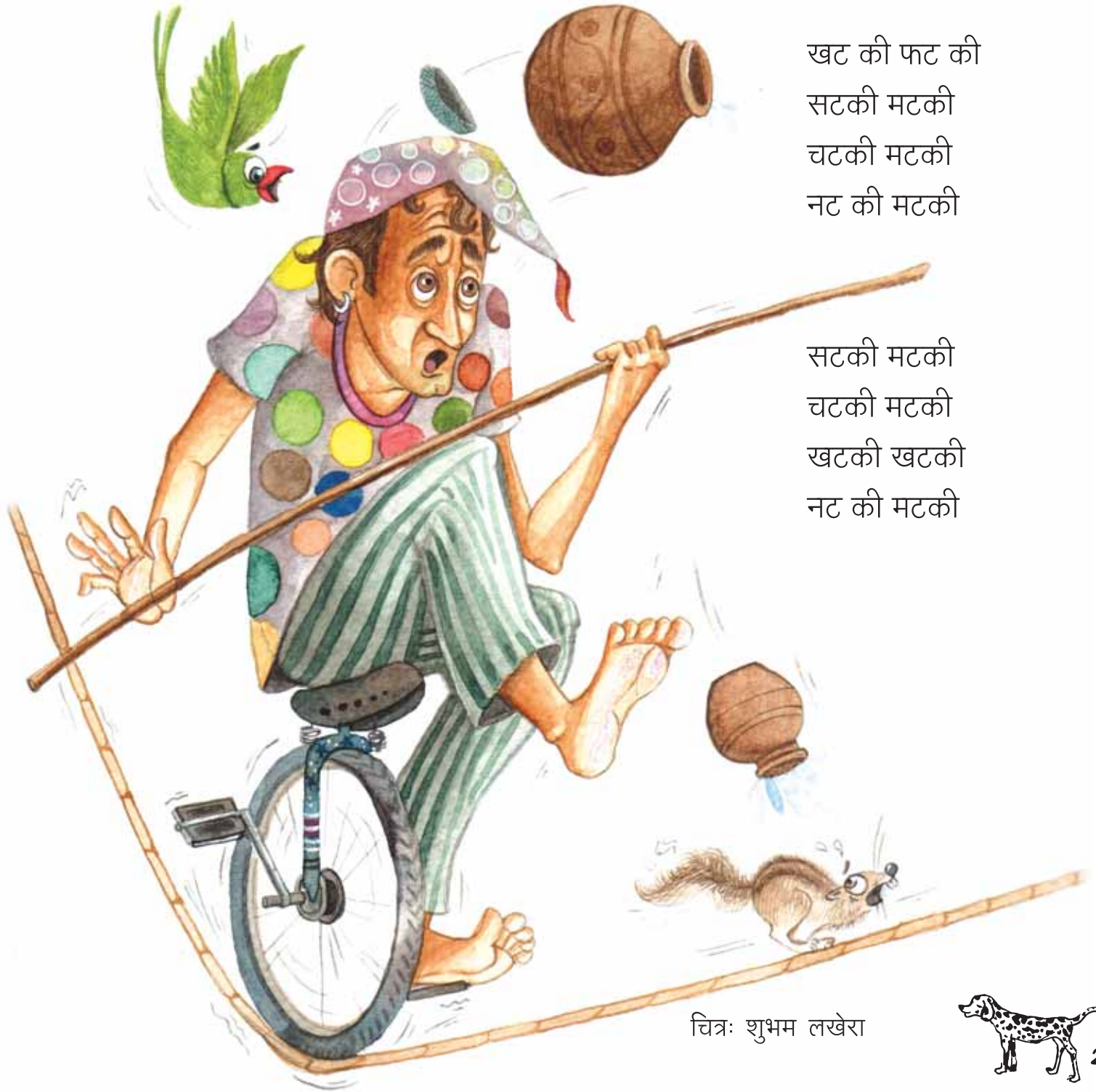
मटकी मटकी
लटकी लटकी
अटकी अटकी
नट की मटकी

अटकी लटकी
सटकी मटकी
झटकी मटकी
नट की मटकी



खट की फट की
सटकी मटकी
चटकी मटकी
नट की मटकी

सटकी मटकी
चटकी मटकी
खटकी खटकी
नट की मटकी



चित्र: शुभम लखेरा





“अम्मा, अन्दर चलो ना!”

“नहीं जा सकते। जाल लगा है।”

“तो इतना बड़ा आदमी अन्दर कैसे चला गया?”

चित्र: प्रोइती रॉय

प्लूटो

इकतारा द्वारा विकसित

सम्पादन: सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

डिज़ाइन एवं चित्र: तापोशी घोषाल

आवरण चित्र: देवब्रत घोष

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा
तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी
की इकाई के लिए
मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी.,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020
से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, सम्पादक: रीमा सिंह

सम्पादकीय पता:

ई-7/413 एच आई जी, प्रथम तल
अरेरा कॉलोनी

भोपाल - 462016

फोन - 0755 2446002, 8989544927

ई मेल: pluto@takshila.net

काँटेदार पूँछवाली छिपकली

करन सोनी (विकास सोनी)

अंक 3 वर्ष 2 अगस्त-सितम्बर, 2017



कोई खतरा है। बच्चे अभी 3-4 हफ्तों के ही हैं। अगर माँ ख्याल न रखे तो जंगली बिल्ली, चील...उनको उठाकर ले जा सकता है।

यह छिपकली अपने बच्चों के साथ शायद घूमने निकली है। रोज़ ही ऐसा होता है। जब सूरज निकलता है तो ये अपने बिल से बाहर आ जाते हैं। सारा दिन धूप में खाना-पीना ढूँढते हैं। और शाम को वापस बिल में चले जाते हैं। और बिल को मिट्टी से बन्द कर लेते हैं। ताकि रात में साँप वगैरह अन्दर न आ जाएँ।

माँ इनका बहुत ख्याल रखती है। जैसे ही कोई खतरा दिखता है अपनी पूँछ और सिर उठाकर वो सबको इशारा कर देती है। बच्चे बिल में भाग जाते हैं। कोई नहीं

जाता तो माँ धक्का देकर अन्दर भेज देती है।

सर्दियों में इनका घूमना-फिरना बन्द हो जाता है। 6 महीने तक ये बिल से बाहर नहीं निकलते हैं। इसलिए अपने खाने का इन्तज़ाम ये पहले से ही कर लेते हैं। बरसातों में ये खूब सारी घास खा लेते हैं। इससे इनका खाना बनता है और इनकी पूँछ में भर जाता है। इनकी पूँछ देखकर किसी और की पूँछ याद आई? सोचो, ऐसी काँटेदार पूँछवाला...

इसे सांडा कहते हैं।

इमली विमली

प्रभात

इमली में बैठी थी विमली
आ खटमिट्ठी इमली खा ले
कोयल से कहती थी विमली
कोयल बोली — सुन तो विमली
साथ मेरे कुछ मीठा गा ले
क्या दिन भर खाती है इमली

चित्र: नीलेश गहलोत

